बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण संस्था

प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव 1921-2021

1819-2019 वचनामृत द्विशताब्दी महोत्सव

युवा अधिवेशन 2019

स्पर्धक सहायिका

प्रवचन-निरूपण-निबंध लेखन

सत्संग प्रवृत्ति - मध्यस्थ कार्यालय

● अनुक्रमणिका ●

विभाग-1 : विषयो की जानकारी

प्रवचन प्रतियोगिता 03

विभाग-2 : अवतरणो की जानकारी

निरूपण प्रतियोगिता 10

विभाग-3 : अंकप्रदान पद्धति की जानकारी

प्रवचन,निरूपण प्रतियोगिता 15

विभाग-4 : अंकप्रदान पद्धति की जानकारी

निबंध लेखन प्रतियोगिता 30

विभाग-1

प्रवचन प्रतियोगिता के विषयो की जानकारी

1)युवको का पथदर्शन वचनामृत :

- युवानो को लौकिक और आध्यात्मिक क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए तथा सफल होने के लिए वचनामृत में से क्या मार्गदर्शन मिलता है ?

  उदा : गढडा प्रथम - 16 में से सकारात्मक विचार।

  ऐसे अन्य विषय वचनामृत में से ले सकते है।
- युवानों के जीवन में आनेवाली समस्याओं का समाधान वचनामृत के किन विधानो के आधार पर मिलता है ?

  उदा. : माता-पिता मुझ पर विश्वास करते नहीं है। यह है युवान की समस्या। उसके हल के लिए वचनामृत सारंगपुर-10 में लिखा है कि

धर्मवाला हो उसका स्वयं के संबंधीजन और अन्य विश्वास करते है।

– इसप्रकार युवानों को रुकावट रुपी समस्याओ का विचार करे और उसका हल वचनामृत के किन विधान में से मिल सके वह ले सकते है।

- युवा अवस्था में आते विघ्नो की पहचान तथा उससे बचने के उपाय संबंधीत वचनामृत का मार्गदर्शन।

  उदा. : वचनामृत सारंगपुर–18 युवान अवस्थारूपी समुद्र को तैरने का उपाय।

- उपरोक्त विषयों को ध्यान में रखकर प्रवचन तैयार करें। उसके लिए निम्नानुसार रीत अपना सकते है।

  वचनामृत की अनुक्रमणिका में दिये अलग अलग विषयों देखें। उसमें से युवानों को कौन से विषय उपयोगी है। उसका विचार करें। उन

विषयों में श्रीजीमहाराज ने जो बात की है वह बात युवानो को किस प्रकार मार्गदर्शन देती है वह समझाईये।

वचनामृत में दिये मार्गदर्शन अनुसार वर्ताव करने से युवानों को लाभ होता हो और उसके अनुसार वर्ताव नहीं करने से नुकसान होता हो ऐसे प्रसंग ले सकते है।

वचनामृत के विचार मुख्य रहे उस प्रकार उसकी पुष्टि में अन्य शास्त्रो के या चिंतको के विचार ले सकते है।

(2) वर्तमान सामाजिक समस्याओं का समाधान वचनामृत :

- वर्तमान युग में समाज-विश्व में मानवजात को रुकावट रुपी समस्याएँ वचनामृत के मार्गदर्शन द्वारा किस प्रकार हल कर सकते है वह इस प्रवचन में प्रस्तुत करना है।

– उदा. 1) एक समस्या है, नात–जात–धर्म–रंग आदि के कारण होते भेदभाव और उसके झगड़े। इस समस्या का हल वचनामृत में आत्मविचार द्वारा दिया है कि, आत्मा की जाति कौन सी, कौन सा गाँव, कौन सा देश, कौन सी नाती आदि... दृष्टि से देखे तो सभी आत्मा ही है।

2) व्यसन की गुलामी : लोग व्यसन नहीं छोड़ सकते परंतु वचनामृत में लोया–8 में कहा है कि, व्यसन छोड़ सकते है।

3) आत्महत्या की समस्या का हल सारंगपुर–18 में है कि,'मूर्ख पुरुष को जब उद्वेग होता है तब वह आत्महत्या करता है परंतु समझ रखे तो दुःख और स्वभाव मिटे, उद्वेग मिटता है।'

4) व्यभिचार – अनैतिक संबंध – बलात्कार

जैसी गुनाहित प्रवृत्ति को यदि रोकना हो तो इस प्रकार की मानसिक वृत्ति को टालने के लिए वचनामृत में मायिक पंचविषय में दोषबुद्धि रखने का उपाय बताया है। उदा. लोया-10, प्रथम-18 आदि...(मन में बूरे विकार न हो उसका उपाय।)

5) विश्व की समस्याओं का कारण क्या है? उसका विचार करे तथा इस कारणों को दूर करने के लिए वचनामृत क्या उपदेश देता है? उसके आधार से प्रवचन तैयार कर सकते है।

उदाः - भ्रष्टाचार, रिश्वत, अनीति का कारण है लोभ और लोभ मिटाने का उपाय वचनामृत के आधार पर क्या है?

इसप्रकार जिस समस्याओं का हल वचनामृत के उपदेशो में से मिलता हो वह समस्या और उसके हल का विधान लेकर

प्रवचन तैयार कर सकते है।

3) वचनामृत में भगवान स्वामिनारायण की यथार्थ पहचान :

वचनामृत में भगवान स्वामिनारायण ने अपना परिचय देते हुए विभिन्न बातें कही है। उनमें से उनकी यथार्थ पहचान क्या है? और किसलिए उन्होंने यथार्थ पहचान के सिवा विभिन्न रीत से अपनी पहचान दी है? आदि संबंधीत वचनामृत के प्रमाणो के आधार पर प्रवचन तैयार कर सकते है।

वचनामृत के विधानों को मुख्य रखकर उसकी पुष्टि के लिए इसके अनुरुप प्रसंग तथा अन्य शास्त्रों के प्रमाण यदि लेना हो तो ले सकते है।

(संदर्भ पुस्तक (गुजराती) : अक्षरपुरूषोत्तम उपासना, ब्रह्मविद्या के अमूल्य दर्शन, वचनामृत

रहस्य भाग-2)

4) साधना में गुणातीत सत्पुरूष की आवश्यकताः

- वचनामृत में जो साधना बताई गई है उसके प्रत्येक अंग में सत्पुरुष का महत्त्व, साधना की स्पष्टता और सिद्धि के लिए गुणातीत सत्पुरुष की आवश्यकता तथा जिन सत्पुरुष की आवश्यकता बताई है वे सत्पुरूष अर्थात् गुणातीत अक्षरब्रह्म स्वरूप सत्पुरुष ही है - आदि मुद्दे प्रवचन में ले सकते है।
- वचनामृत के विधानो को मुख्य रखकर उसकी पुष्टि के लिए प्रसंग तथा अन्य शास्त्रो के प्रमाण ले सकते है।

  (संदर्भ पुस्तक (गुजराती) : वचनामृत रहस्य भाग-1, 3, 4, 5 अथवा ब्रह्मविद्या का राजमार्ग : स्वामिनारायणीय साधना)

विभाग - 2

निरूपण के लिए वचनामृत के अवतरणो संबंधीत जानकारी

1)**वचनामृत : ग.प्र.-16 :** 'भगवान के जिस भक्त में सत-असत का विवेक हो, वह अपने में विद्यमान दोषों को जान लेता है और विचार करके उन अवगुणों का परित्याग करता है। यदि संत में अथवा किसी सत्संगी में स्वयं को कोई दोष होने का आभास हो, तो वह उसका त्याग कर देता है और केवल उसके गुण को ही ग्रहण करता है।'

● इस अवतरण अनुसार विवेकी भक्त अर्थात् (1) स्वयं के अवगुण को जाने (2) उसका त्याग करें। (3) दूसरों के अवगुण का त्याग करें। और (4) दूसरों के गुण ग्रहण करें। - इन चार मुद्दों पर

निरुपण करना है।

2) **वचनामृत : ग.प्र.-18 :** 'पंच ईन्द्रियों द्वारा जीव जो आहार करता है, वह यदि शुद्ध आहार करेगा तो अंतःकरण शुद्ध होगा और अंतःकरण शुद्ध होने से निरंतर भगवान की स्मृति बनी रहेगी। यदि पंचेन्द्रियों के आहार में एक भी इन्द्रिय का आहार मलिन रहा, तो अंतःकरण भी मलिन हो जाता है।'

● इन्द्रियों के आहार अर्थात् आँख, नाक, कान, जीभ, त्वचा आदि पंच ज्ञानेन्द्रियो द्वारा जो कुछ ग्रहण किया जाता है उसकी अंतःकरण पर अर्थात् मन के विचारों पर कैसी असर होती है वह इस वचनामृत में बताया है। इस पर निरुपण कर सकते है। इस वचनामृत के विधान को मुख्य रखकर उसके अनुरुप प्रसंग तथा अन्य जानकारी प्रवचन में ले सकते है।

3) वचनामृत : ग.प्र.-54 : 'स्वधर्म, ज्ञान, वैराग्य तथा माहात्म्य-ज्ञान सहित भगवद्भक्ति करने वाले भगवान के एकांतिक साधु के प्रसंग से भागवतधर्म का पोषण होता है तथा ऐसे साधु के प्रसंग से ही जीवों के लिए मोक्ष का द्वार भी खुल जाता है।'

● भागवत धर्म का पोषण हो उसके लिए यहाँ बताये गये संत का प्रसंग किस प्रकार करें? यह मध्यवर्ती विचार के आधारित निरूपण तैयार करें।

4) वचनामृत : ग.प्र. - 71 : 'भगवान के भक्तों को चाहिए कि, वे भगवान का स्वरुप अक्षरधाम सहित पृथ्वी पर विराजमान है ऐसा समझें और दूसरों के समक्ष भी ऐसी ही वार्ता करें।'

● भगवान अक्षरब्रह्म सहित इस पृथ्वी पर आते है वह समझना किसलिए जरुरी है? उसमें

क्या समझें? और यह बात दूसरों को करें, वह अक्षरब्रह्म कौन उसकी स्पष्टता.... आदि मुद्दे यहाँ ले सकते है।

5) **वचनामृत : लोया-3 :** 'जिसे भगवान एवं संत का माहात्म्य-ज्ञान सहित निश्चय हो गया हो, वह भगवान तथा संत के लिए क्या नहीं कर सकता? उनके लिए वह कुटुंब का त्याग करे, लोकलज्जा का त्याग करे, सुख का त्याग करे, धन का त्याग करे, स्त्री का त्याग करें, और स्त्री हो तो वह पुरुष का त्याग करें।'

● भगवान के निश्चयवाला भक्त कैसा हो उसके लक्षण बताये है। उसके अनुरुप निरूपण तैयार कर सकते है।

6) **वचनामृत : ग.म. - 25 :** 'जैसे उकाखाचर को संत की सेवा करने का व्यसन पड़ चुका है, वैसा ही भगवान तथा भगवान के संत की

सेवा करने का जिसे व्यसन हो जाए और उसके बिना एक क्षण भी न रहा जाए, तो उसके अंतःकरण की मलिन वासना पूर्णतः नष्ट हो जाती है।'

- उकाखाचर को सेवा का व्यसन कैसा था? उस प्रकार किसकी सेवा करने से कैसा फल मिलता है? यह मुद्दे ले सकते है।
- यहाँ वासना टालने के लिए भगवान और संत दोनों की सेवा की बात है। वह सेवा अर्थात् किसकी सेवा वह स्पष्टता निरूपण में करना जरूरी है।
- अर्थात् भगवान और संत दोनों की अर्थात् अक्षरपुरुषोत्तम की सेवा का व्यसन हो, तो इस वचनामृत में बताये अनुसार फल मिले, यह मध्यवर्ती विचार के साथ निरूपण होना चाहिए।

विभाग - 3

प्रवचन, निरूपण प्रतियोगिता अंकप्रदान पद्धत्ति की जानकारी

(1) मुद्दे की स्पष्टता : 20 अंक

- (प्रवचन - 20 अंक, निरूपण - 30 अंक)

- विषय के अनुरूप जो मुद्दा प्रस्तुत करना है,वह कितना स्पष्टरूप से कहा गया है ? प्रवचन में समाविष्ट जानकारी तथा उसका बोध (प्रत्येक जानकारी द्वारा क्या कहना है वह) कितनी स्पष्ट रुप से प्रस्तुति होती है ? लिये हुए प्रमाण विषय के अनुरूप है या नहीं ? इस बातों के आधार पर मुद्दों की स्पष्टता निश्चित होती है। अर्थात् जो मेटर पसंद किया जाये वह जिस प्रकार से बोला जाये, वह विषय के अनुरूप कितना है ? तथा सामनेवाले को समझ में आये ऐसी स्पष्टता से प्रस्तुत हुआ है या नहीं ? उसे

मुद्दें की स्पष्टता कहलाये। उदा:

★ **विषय : 'सेवा की रीत'**

उदा. 1 : 'सेवा किस प्रकार करनी चाहिए? भगतजी महाराज ने सेवा की उसप्रकार। स्वामी ने जैसा कहा वैसा ही उन्होंने किया। स्वामी ने गिरनार बुलाने को कहा। भगतजी ने बिना शंका किये उस आज्ञा का पालन किया, मुंडन करने को कहा तो अभिमान छोड़कर नाई की सेवा की। भगतजी ने चंदनी सीने की सेवा भजन करते हुए किया। इसलिए स्वामी प्रसन्न हो गये। इसप्रकार हमें भी सेवा करनी चाहिए।'

उदा. 2 : 'सेवा की रीत हमें भगतजी महाराज के द्वारा सीखने मिलती है। भगतजी महाराज के लिए ऐसा कहा जाता था कि, स्वामी ने जैसा कहा वैसा ही उन्होंने किया। इसप्रकार सत्पुरुष की आज्ञानुसार तत्परता से सेवा करनी चाहिए। भगतजी गिरनार को बुलाने गये! सेवा में बुद्धि को बंद कर देना चाहिए। स्वामी ने मुंडन की सेवा करने को कहा तो भगतजी

ने ऐसी छोटी सेवा का भी उत्साह से स्वीकार किया! चाहे जैसी सेवा हो परंतु अभिमान छोड़कर वह करना चाहिए, और चंदनी सीने की सेवा करते करते भगतजी अखंड भजन करते थे। इसप्रकार भजन करते करते सेवा करनी चाहिए।'

★ **जानकारी :** उदाहरण एक और दो में से किस उदाहरण में कहने का मुद्दे स्पष्ट रूप से समझ में आता है? किस लिए? उसका विचार करें।

– यहाँ विषय 'सेवा की रीत' है। **उदा. 1** में केवल प्रसंग ही कहे गये है। उस प्रसंग के बाद सेवा की कौन सी रीत उसकी स्पष्टता नहीं हुई है। और सेवा की रीत कहना है उसमें 'बुद्धि को बंद करके आज्ञा का पालन किया।' ऐसा बोलने से अन्य विषय 'आज्ञा' की बात हो जाती है। जबकि **उदा. 2** में आज्ञा का सीधा उल्लेख किये बिना वही प्रसंग कहा गया है।

– चंदनी के प्रसंग में **उदा.1** में 'प्रसन्नता' का उल्लेख किया है। जो सेवा का फल है, परंतु जब सेवा की रीत

का मुद्दा प्रस्तुत हो तब उसमें **उदा.2** की तरह मात्र रीत ही प्रस्तुत हो वह अधिक स्पष्ट प्रस्तुति कहलाये। – उदा.1 में प्रसंग के आधार पर सेवा की रीत कौन सी वह श्रोता को सोचना पड़ता है। जबकि **उदा. 2** में वक्ता द्वारा ही वह स्पष्ट रुप से प्रस्तुत हो जाता है। इसप्रकार उदा.1 में मुद्दे की स्पष्टता कम है और **उदा.2** में अधिक है।

(2) विषय वैविध्य 20 अंक

– इसमें दो बातें है। पहली बात विषय का वैविध्य अर्थात् प्रसंग, दृष्टांत, तर्क, क्वोटेशन, अन्य भाषा का उपयोग, शास्त्रप्रमाण, काव्य, साखी, श्लोक, सुविचार, मनन आदि जैसे विविधतासभर विषय का कितने प्रमाण में समावेश हुआ है उसे विषय वैविध्य कहते है। 7 मिनट के निरुपण में सामान्य रुप से दृष्टांत (काल्पनिक उदाहरण) और प्रसंग (वास्तविक उदाहरण) करीब 5 से 6 आ सके। यदि किसी दृष्टांत

या प्रसंग का वर्णन विस्तृतरूप से हो तो किसी का मात्र उल्लेख ही हो सके। यह मात्र एक सीधी गिनती है। दृष्टांत या प्रसंग कम ज्यादा हो सके। प्रस्तुत किये हुए दृष्टांत या प्रसंग की प्रमाणभूतता या उसका भावार्थ और उसके बोध के आधार पर अंक दिये जायेंगे। उसी प्रकार अन्य जानकारी जैसे कि, प्रमाण, साखी, श्लोक, पंक्ति आदि में भी अंक दिये जायेंगे। और दूसरी बात विषय की प्रस्तुति का वैविध्य अर्थात् प्रत्येक विषय की प्रस्तुति में कैसा वैविध्य सामिल किया गया है वह। जैसे कि, मुद्दे अथवा विषय की सीधी प्रस्तुति हो और मुद्दा अथवा विषय की जिज्ञासा बनी रहे उस प्रकार प्रश्न पूछकर प्रस्तुति हो।

उदा. : 'कंटाळो ने आळस छोडी, शरम ने हुं पद मूकी, मननुं मुकी करीए सेवा, तन तोडीने करीए सेवा।' 'मित्रों! सेवा में आलस और उबना कैसा? देखो भगतजी महाराज को। स्वामी का आदेश मिलते

ही तुरंत ही पालन करने लग जाते थे। अति कष्टदायक चूना पीसने की सेवा में उनका होंसला कम नहीं हुआ है। जी हां, क्या आप जानते है ? सेवारुपी यज्ञ में बाधारुप 'हड्डी' क्या है ? वह है मानरूपी हड्डी, परंतु भगतजी महाराज को वह बाधारुप नहीं हुआ। उन्होंने हमें सीखाया कि, 'अहम' छोड़कर छोटे से छोटी सेवा भी महिमा से करे। भगतजी महाराज ने बर्तन साफ किये, मरा हुआ कुत्ता उठाया, नाई की सेवा की और बताया कि, कोई भी सामान्य नहीं है। ऐसे महापुरूष जो सेवा करे वह सेवा हमें करने मिले वह गौरव की बात कहलाये। उसमें शर्म नहीं होती।'

(3) प्रस्तुत शैली **20 अंक**

- प्रस्तुति के अंक निम्नानुसार मुद्दो को ध्यान में रखकर मिलेंगे।

(1) स्पष्ट उच्चार (स्वाभाविकरुप से होते हुए प्रादेशिक उच्चार योग्य रखें।)

(2) ऊतार–चढ़ाव

(3) योग्य शब्दों का उपयोग और वाक्य में शब्दों का योग्य जगह पर उपयोग

(4) वाक्य की क्रमबद्धता

(5) सातत्य (फ्ल्युअन्सी)(प्रवाह)

(6) आँख द्वारा संपर्क

(7) चहेरे का हावभाव

(8) हाथ का हलनचलन

(9) अल्पविराम और पूर्णविराम के आगे योग्य विराम आदि।

प्रवचन के दौरान उपरोक्त मुद्दों का योग्य, सप्रमाण संकलन हुआ है या नहीं उसके अनुसार प्रस्तुत शैली का अंक निश्चित होगा। हावभाव तथा बोलने का प्रवाह साहजिक हो वह अधिक अच्छा कहलाये। अति नाटकीय हावभाव तथा बोलने की शैली योग्य न कहलाये।

निरूपण में प्रस्तुत शैली में ही क्रमप्रवाह को ध्यान में लिया जायेगा।

(4) भाषावैभव : 10 अंक

– (केवल प्रवचन में) भाषा की सरलता, साहजिकता के साथ साथ भाषाकीय श्रींगारों से भाषावैभव का निर्माण होता है। योग्य शब्दों, वाक्य रचना, उपमाएँ, रूपक, प्रास का मेल–मिलाप, स्पष्ट और सचोट वाक्य आदि बातों का समावेश भाषावैभव में होता है। भाषावैभव का उदेश्य यह है कि, जो बात प्रस्तुत करनी है, वह सरलता से और स्पष्टरुप से समझ में आ जाये, फिर भी असरकारक और प्रभावक लगे। भाषा में वैभव सामिल करते समय यह ध्यान में रखे कि, उससे वह समझने में कठिन नहीं होना चाहिए।

– 'भगतजी महाराज ने सेवा में अपने देह की परवाह नहीं की।' इस विधान में भाषावैभव सामिल

करके किस प्रकार प्रस्तुत कर सकते है इसलिए यहाँ दो उदाहरण दिये गये है।

उदा.1 ‘भगतजी महाराज ने सेवा के यज्ञ में अपने देह की आहुति दे दी थी।’ यहाँ यज्ञ के रूपक द्वारा भाषावैभव सामिल किया गया है।

उदा.2 ‘सेवा के अगाध समुद्र में लहरो की चिंता किये बिना भगतजी ने अपनी देहरूपी नौका उसमें तैरने रख दी।’ यहाँ नाव की उपमा द्वारा भाषा वैभव सामिल किया गया है।

- उदा.1 में दिया गया रूपक योग्य और असरकारक है, परंतु उदा.2 में दी गई उपमा थोड़ी विचित्र है और अस्पष्ट है। इसलिए वह असरकारक नहीं होता।

(5) क्रमप्रवाह : 10 अंक

- (केवल प्रवचन में) पूरे प्रवचन के मुद्दो का

विषय की क्रमबद्धता, एक मुद्दा या विषय के बाद दूसरा मुद्दा या विषय प्रस्तुत करने के लिए दोनों के बीच कैसा संबंध लिया है ? आदि बातों का समावेश क्रमप्रवाह में होती है। इसप्रकार प्रत्येक मुद्दे तथा विषय को एक दूसरों के साथ किस प्रकार जोड़े गये है उसे लींक कहते है। जैसे फूलों को दोरे में गुथने से सुंदर हार बनता है, उसी प्रकार मुद्दे और विषय एक लींक में पीरोया जाये तो प्रवचन रसप्रद बने और श्रोताओं को एक सूत्रता का अनुभव होता है। यदि क्रम प्रवाह योग्य रूप से न किया जाये तो श्रोताओं को सुनने में बराबर नहीं लगता।

– आगे दिये गये उदा.2 में सीधे प्रसंग और सेवा की प्रस्तुति हुई है। उसे लींक में इस प्रकार प्रस्तुत कर सकते है।

– 'सेवा की आदर्श रीत भगतजी महाराज के द्वारा

सीखने मिलती है। सेवा में प्रथम सौपान है, उत्साह और तत्परता। भगतजी महाराज के लिए ऐसा कहा जाता था कि, स्वामीजी ने कहा, वैसा ही भगतजी ने किया। वे ऐसी तत्परता से सेवा करते थे। सेवा करने का इतना उत्साह और उमंग होता है कि, आज्ञापालन में बुद्धि में कोई शंका नहीं रहती। यह सौपान भी भगतजी ने सिद्ध किया था। स्वामीश्री के कहने से गिरनार को बुलाने जाने की सेवा करने में भगतजी को अपनी बुद्धि बाधारूप नहीं हुई। सेवा का इससे भी एक श्रेष्ठ सौपान है अभिमान छोड़कर सेवा करना। मुंडन करने की, लोक की दृष्टि से सामान्य सेवा भी भगतजी ने 6-6 महिने तक की है और सेवा का सर्वश्रेष्ठ सौपान है, अखंड भजन करते हुए सेवा करें। भगतजी ने चंदनी सीने की सेवा अखंड भजन करते हुए किया। इसप्रकार सेवा के सभी सौपान भगतजी

महाराज के जीवन द्वारा सीखने मिलता है।'

– यहाँ सेवा के सोपान द्वारा चढ़ते क्रम में श्रृंखला रखी गई है। उसे सीधी रीत से कहना हो तो 'सेवा की चार रीत है, पहली..., दूसरी..., तीसरी...., चौथी....,' इस प्रकार भी रख सकते है।

(6) आरंभ–अंत : 05 अंक

– (केवल प्रवचन में) आरंभ और अंत की योग्यता और असरकारकता को ध्यान में रखकर अंकप्रदान होगा। प्रवचन के विषय के अनुरुप आरंभ और अंत होना जरूरी है। प्रवचन का आरंभ जीज्ञासा उत्पन्न करे या प्रभाव पैदा करे ऐसा हो सकता है। जबकि अंत प्रेरणात्मक प्रभाव छोड़ जाता है। श्रोता को किसी विचार में मग्न कर देता है, जिससे सुनने के बाद वह विचार उसके मन में लगा रहता है। समग्र प्रवचन का सार, संक्षिप्त में दृढ़ हो जाये उस प्रकार का हो

सकता है। आरंभ और अंत के लिए प्रसंग, बोधकथा, चूटुकले, पंक्ति, श्लोक, क्वोटेशन, मनन, तर्क आदि विषय–वैविध्य का उपयोग कर सकते है।

(7) समय मर्यादा : **05 अंक**

– निश्चित किये समय से 20 सेकन्ड से अधिक समय होगा तो समयमर्यादा के अंक नहीं मिलेंगे।

(8) समग्र असर : **10 अंक**

– उपरोक्त गुणप्रदान के विषय उपरांत निर्णायक को स्वयं को प्रचन तथा प्रस्तुति कैसी लगी उसके आधार पर निर्णायक समग्र असर के अंक देंगे।

(9) वांचन की रीत : **10 अंक**

– वचनामृत पढ़ने की सांप्रदायिक रीत तथा एक विशिष्ट परंपरा है। उस अनुसार वांचन होता है या नहीं उसे ध्यान में रखा जायेगा। और वांचन करते समय वाक्य में अर्थस्पष्टता बनी रहे उस प्रकार

योग्य स्थान पर विराम लिया है या नहीं उसे ध्यान में लिया जायेगा।

उदा : जैसा दूसरों को समझाने का आग्रह है,/ ऐसा स्वयं को समझने का हो/ और जैसा दूसरों के दोष देखने का आग्रह है, / वैसा स्वयं का दोष टालने का हो / तो कोई कमी न रहे। – इस प्रकार जहाँ '/' किये है, वहाँ पर विराम लेना योग्य है। परंतु 'जैसा दूसरो को/ समझाने का/ आग्रह है ऐसा / स्वयं को/...' इसप्रकार से विराम लेना वह योग्य नहीं है।

(2) समापन : **05 अंक**

– समाप्ति की योग्यता और असरकारकता को ध्यान में लेकर अंकप्रदान होगा। निरूपण के विषय के अनुरूप अंत होना जरूरी है। अंत प्रेरणात्मक प्रभाव छोड़ जाता है, श्रोता को किसी विचार में मग्न कर देता है, जिससे सुनने के बाद भी वह विचार उसके मन में गूंजता रहता है, समग्र निरूपण का सार संक्षिप्त

में दृढ़ कराये उस प्रकार का हो सके। अंत के लिए प्रसंग, बोधकथा, मजाकी चूटकले, पंक्ति, श्लोक, क्वोटेशन, मनन, तर्क आदि विषय–वैविध्य उपयोग कर सकते है। निरूपण में आरंभ की अपेक्षा अंत का महत्त्व अधिक होता है।

विभाग - 4

निबंध लेखन प्रतियोगिता अंकप्रदान पद्धति की जानकारी

(1) विषय की स्पष्टता : (30 अंक)

– समग्र निबंध में दिया हुआ विषय कितना स्पष्ट रूप से प्रस्तुत हुआ है ? निबंध में लिये गये मुद्दे और पेटा मुद्दे विषय के साथ सुसंगत है या नहीं ? प्रत्येक मुद्दों के द्वारा जो बात समझानी है वह स्पष्टरूप से समझ में आती है या नहीं ? प्रत्येक विषय जैसे कि, प्रसंग, दृष्टांत, तर्क, मनन, प्रमाण आदि द्वारा जो समझाना चाहता है वह स्पष्टरूप से लिखा है या नहीं ? इस बातों के आधार पर विषय की स्पष्टता निश्चित होती है।

अर्थात् जो विषय पसंद किया जाये और वह विषय जिस प्रकार से लिखा जाये वह लेखन विषय के अनुरूप कितना है ? तथा वांचन करनेवाले को

समझ में आ जाये ऐसी स्पष्टता पूर्वक लिखा गया है या नहीं? उसके आधार पर विषय की स्पष्टता के अंक मिलते है।

उदा. : विषय : 'सेवा की रीत'

★ उदा. 1 : 'सेवा किस प्रकार करनी चाहिए? भगतजी महाराज ने सेवा की उसप्रकार। स्वामी ने जैसा कहा वैसा ही उन्होंने किया। स्वामी ने गिरनार बुलाने को कहा। भगतजी ने बिना शंका किये उस आज्ञा का पालन किया, मुंडन करने को कहा तो अभिमान छोड़कर नाई की सेवा की। भगतजी ने चंदनी सीने की सेवा भजन करते हुए किया। इसलिए स्वामी प्रसन्न हो गये। इसप्रकार हमें भी सेवा करनी चाहिए।'

★ उदा. 2 : 'सेवा की रीत हमें भगतजी महाराज के द्वारा सीखने मिलती है। भगतजी महाराज के लिए ऐसा कहा जाता था कि, स्वामी ने जैसा कहा वैसा ही उन्होंने किया। इसप्रकार सत्पुरुष की आज्ञानुसार

तत्परता से सेवा करनी चाहिए। भगतजी गिरनार को बुलाने गये! सेवा में बुद्धि को बंद कर देना चाहिए। स्वामी ने मुंडन की सेवा करने को कहा तो भगतजी ने ऐसी छोटी सेवा का भी उत्साह से स्वीकार किया! चाहे जैसी सेवा हो परंतु अभिमान छोड़कर वह करना चाहिए, और चंदनी सीने की सेवा करते करते भगतजी अखंड भजन करते थे। इसप्रकार भजन करते करते सेवा करनी चाहिए।'

★ **जानकारी :** उदाहरण एक और दो में से किस उदाहरण में कहने का मुद्दे स्पष्ट रूप से समझ में आता है ? किस लिए ? उसका विचार करें।

– यहाँ विषय 'सेवा की रीत' है। **उदा. 1** में केवल प्रसंग ही कहे गये है। उस प्रसंग के बाद सेवा की कौन सी रीत उसकी स्पष्टता नहीं हुई है। और सेवा की रीत कहना है उसमें 'बुद्धि को बंद करके आज्ञा का पालन किया।' ऐसा बोलने से अन्य विषय 'आज्ञा'

की बात हो जाती है। जबकि **उदा. 2** में आज्ञा का सीधा उल्लेख किये बिना वही प्रसंग कहा गया है।

– चंदनी के प्रसंग में **उदा.1** में 'प्रसन्नता' का उल्लेख किया है। जो सेवा का फल है, परंतु जब सेवा की रीत का मुद्दा प्रस्तुत हो तब उसमें **उदा.2** की तरह मात्र रीत ही प्रस्तुत हो वह अधिक स्पष्ट प्रस्तुति कहलाये।

– उदा.1 में प्रसंग के आधार पर सेवा की रीत कौन सी वह श्रोता को सोचना पड़ता है। जबकि **उदा. 2** में वक्ता द्वारा ही वह स्पष्ट रुप से प्रस्तुत हो जाता है। इसप्रकार उदा.1 में मुद्दे की स्पष्टता कम है और **उदा.2** में अधिक है।

(2) विषय वैविध्य : (20 अंक)

– विषयो का वैविध्य अर्थात् निबंध में जिस किसी मुद्दे के अनुरुप प्रसंग दृष्टांत, तर्क, क्वोटेशन, अन्य भाषा का उपयोग, शास्त्रप्रमाण, काव्य, साखी, श्लोक,

सुविचार, मनन आदि जैसे विविधतासभर विषय का कितने प्रमाण में समावेश हुआ है या नहीं उसके आधार पर तथा विषयों की सत्यता और प्रमाणभूतता के आधार से अंक प्राप्त होंगे।

(3) भाषा शैली : (20 अंक)

– भाषा शैली में यहाँ बताई गई बातों को ध्यान में रखकर अंक दिया जायेगा।

(1) मुद्दों का क्रम, निबंध की संरचना, विषय का क्रम प्रवाह आदि....

(2) भाषा की सरलता, प्रवाहितता और असरकारकता, योग्य वाक्यरचना

(3) भाषावैभव : अर्थात् योग्य शब्दों, अलंकार, उपमा, रूपक, प्रास का मेल, स्पष्ट और चोटदार वाक्य प्रयोग, चित्रात्मक वर्णन आदि...

– भाषाशैली में भाषावैभव का उदेश्य यह है कि, जो बात प्रस्तुत करनी है, वह सरलता से और

स्पष्टरुप से समझ में आ जाये, फिर भी असरकारक और प्रभावक लगे। भाषा में वैभव सामिल करते समय यह ध्यान में रखे कि, उसस वह समझने में कठिन नहीं होना चाहिए।

– 'भगतजी महाराज ने सेवा में अपने देह की परवाह नहीं की।' इस विधान में भाषावैभव सामिल करके किस प्रकार प्रस्तुत कर सकते है इसलिए यहाँ दो उदाहरण दिये गये है।

★ **उदा.1** 'भगतजी महाराज ने सेवा के यज्ञ में अपने देह की आहुति दे दी थी।' यहाँ यज्ञ के रूपक द्वारा भाषावैभव सामिल किया गया है।

★ **उदा.2** 'सेवा के अगाध समुद्र में लहरो की चिंता किये बिना भगतजी ने अपनी देहरूपी नौका उसमें तैरने रख दी।' यहाँ नाव की उपमा द्वारा भाषा वैभव सामिल किया गया है।

– उदा.1 में दिया गया रूपक योग्य और

असरकारक है, परंतु उदा.2 में दी गई उपमा थोड़ी विचित्र है और अस्पष्ट है। इसलिए वह असरकारक नहीं होता।

(4) मौलिकता : विचार – कल्पना 20 अंक

– संदर्भ ग्रंथ में दिये गये विषय के उपरांत लिये गये अन्य विषय को मौलिकता कहते है। कोई भी विषय में से नूतन बोध निकालकर प्रस्तुत किया जाये तो वह मौलिकता कहलाये।

– विषय के अनुरूप लेखक के स्वयं के विचार, मनन, अनुभव, निरीक्षण या निष्कर्ष आदि बातों को मौलिकता कहते है।

– कोई भी विषय या बात को निराले दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया जाये तो वह लेखन की मौलिकता कहलाये।

– अन्य स्पर्धको के लेखन से या सामान्यतः जिस किसी विषय में जिस प्रकार से लिखा जाता हो ऐसे

लेखन से निबंध कितनी मात्रा में नवीन है वह भी मौलिकता कहलाये।

– मौलिकता मिलाते हुए विषय की स्पष्टता को हानी न पहुँचे तथा सैद्धांतिक अस्पष्टता या विरोध न आ जाये उसका ध्यान रखना जरूरी है।

★ **मौलिकता के उदाहरण :**

उदा.1 : 'निशान चूक माफ, नही माफ नीचा निशान' ऐसा कहा जाता है शास्त्रीजी महाराज को 'नीचा निशान' मान्य नहीं था। इतना ही नहीं 'निशान चूक' भी मान्य नहीं था। एकबार ध्येय निश्चित किया बाद में उसे सिद्ध करके ही वे रहते थे। (प्रसंग)

★ **जानकारी :** यहाँ 'निशान चूक....' इस प्रचलित विचार में लेखक ने अपना विचार मिलाकर शास्त्रीजी महाराज की ध्येयनिष्ठा का विशेष रुप से वर्णन किया है।

उदा. 2 : 'भगतजी महाराज को गिरनार बुलाने

की आज्ञा हुई। प्रत्येक समय गिरनार बुलाने का नहीं होता, परंतु हमारी बुद्धि में न बैठे ऐसी आज्ञा हमें कर सकते है। जैसे कि, प्रमुखस्वामी महाराज कहते है कि, 'अभ्यास करते विद्यार्थीयों को मोबाईल नहीं रखना चाहिए।' सामान्य बुद्धि से विचार करे तो मोबाईल की आवश्यकता है, परंतु उस समय आज्ञा में तर्क न करके वह आज्ञा पालन करें, वह भगतजी महाराज के इस प्रसंग में से सीखना चाहिए।'

★ **जानकारी :** यहाँ पर गिरनार को बुलाने की आज्ञा को लेखक ने अपने विचार मिलाकर वर्तमान परिस्थिति के साथ तुलना करके प्रसंग का बोध स्पष्ट किया है।

उदा.3 : 'रसोई में यदि केवल नमक हो तो नहीं चलता, केवल मिर्च नहीं चलती, केवल नींबु न चले, केवल शक्कर न चले, परंतु नमक, मिर्च, शक्कर, नींबु योग्य रीत से मिले, तो स्वाद अच्छा आता है

उसी प्रकार कोई भी कार्य में ऐसी विविध प्रकृतिवाले लोग इकट्ठे होकर एकता से कार्य करे तो परिणाम अच्छा मिलता है।'

★ **जानकारी :** यहाँ पर लेखक ने अपने अवलोकन के आधार पर निष्कर्ष निकालकर मुद्दा प्रस्तुत किया है। इसप्रकार मौलिकता सामिल करने में खास ध्यान रखना पड़ता है कि, सैद्धांतिक रुप से निष्कर्ष प्रतीति जनक है या नहीं। बिल्कुल मनघढ़न निष्कर्ष निकालने से प्रभावकता और प्रतीतिजनकता को हानी पहुँचती है और सैद्धांतिक विरोध हो ऐसा निष्कर्ष भी योग्य न कहलाये।

(5) समग्र असर **(10 अंक)**

– उपरोक्त बातों के उपरांत व्यक्तिगत रूप से निर्णायक के मन पर निबंध की कैसी असर हुई है ? निर्णायक को निबंध कैसा लगा ? उसके आधार पर निर्णायक समग्र असर के अंक देंगे।